

किसान विमर्श की महागाथा उपन्यास ढलती साँझ का सूरज : मधु कांकरिया

प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा

सहा.प्राध्यापक तथा शोध निर्देशक
महात्मा ज्योतिबा फुले महाविद्यालय,
मुखेड त.मुखेड जि.नांदेड

प्रस्तावना :- भारत देश में किसान को खेती के माध्यम से उपजीविका का महत्वपूर्ण साधन उपलब्ध होता है। किसान इस देश में रीड की हड्डी है। वह स्वयं भूखा रहकर भी अन्य लोगों को भरपेट खाना खिलाने में समाधान मानता है। सामाजिक समता और न्याय की अपेक्षा में जिनेवाले इस वर्ग को सुख, शांति, समाधान के पल मिलने के बजाए हर समय दुत्कार, प्रताडना, दुख, यातनाएँ झेलने के लिए विवश किया गया है। समाज में किसान की आशा, आकांक्षाएँ बहुत कम होती है। जिनमें घर, भोजन, निवास, शिक्षा, आरोग्य के साथ-साथ बेटी को सुखसे ससुराल बिदा करना चाहता है। इन प्राथमिक आवश्यकताओं के प्रतिपत्ति के अलावा अपेक्षा का शिकार किसान का हुआ है। जिसके अंतर्गर्भ में अनेक पीड़ा को झेलकर भी चेहरे पर सदैव हँसी दिखाता है। मनुष्य की वेदना जब अपनी सीमा से परे निकल जाती है तब वह आत्महत्या का सोचने लगता है। जो भारतीय " कृषी संस्कृति " के लिए बहुत बड़ा कलंक है। किसान की आत्महत्या होना आम बात नहीं, फिर भी सोचने के लिए मजबूत करनेवाला विषय, प्रश्न है। जो पुरोगामी महाराष्ट्र के मराठवाडा, विदर्भ में इसके परिणाम अधिक मात्रा में मिलते हैं। जो हमें मधु कांकरिया के " ढलती साँझ का सूरज " इस उपन्यास में उभरकर सामने आया है। जो पाठक को सोचने के लिए विवश करता है।

मधु कांकरिया एक ख्यातनाम और समकालीन साहित्य का उमदा व्यक्तिमत्त्व की लेखिका है। लेखिका अपने साहित्यिक क्षेत्र में लेखन करने से पहले जनजीवन के गर्भ में उठनेवाले बवाल को स्वयं अनुभव लेकर लेखन के माध्यम से सशक्त साहित्य विधा का जन्म कराती है। मनुष्य के जीवन में अनुमान गलत हो सकते हैं लेकिन अनुभव कभी गलत नहीं हो सकता। जो अनुभव मिलता है वह उसका गुरु बन जाता है। लेखिका का साहित्य अनुभव का भण्डार है जो हर क्षेत्र में नित नयी समस्या का सामना करने के लिए खड़ी है। आपको बचपन से साहित्य पढ़ने की रूची है। साहित्य और पर्यटन का जीवन में बहुत बड़ा महत्त्व है। जो आपके साहित्य की गरिमा को बढ़ानेवाला है। जिन्होंने अपने साहित्य लेखन का विषय अनछूए विषयों को मौलिकता प्रदान करते हैं। जिनके रचनाओं में " खुले गगन के लाल सितारे, सलाम आखिरी, पत्ताखोर, सेज पर संस्कृत, सुखते चिनार, हम यहाँ थे और ढलती साँझ का सूरज (उपन्यास), बीतते हुए, और अन्त में ईशु, चिड़िया ऐसे मरती है, पाँच बेहतरीन कहानियाँ, भरी दोपहर के अंधरे, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, युद्ध और बुद्ध, स्त्री मन की कहानियाँ, जलकुम्भी, नंदीग्राम के चूहे (कहानी संग्रह), अपनी धरती अपने लोग (सामाजिक विमर्श), बादलों में बारुद (यात्रा - वृत्तांत) " जैसे अनमोल साहित्य कृतियों को प्रकाशित करते रहे हैं। जिसके लिए उन्हें अनेक साहित्य सम्मान से पुरस्कृत किया गया है। साहित्यकार मधु कांकरिया का किसान विमर्श पर ख्यातनाम उपन्यास " ढलती साँझ का सूरज " है। जिसमें आत्महत्या करनेवाले तीन लाख किसानों की दर्दभरी कहानी मौजूद है। खासकर मराठवाडा के विभिन्न जिलों में किसान परिवार को आर्थिक विपन्नता के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पडा है। उन समस्याओं को कोई समाधान न मिलने से अंतिमतः किसान आत्महत्या का मार्ग अनुकरण करने लगा है।

लेखिका अपने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से किसान वर्ग की मानसिक उथल-पुथल, सरकार की गलत नीतियाँ, अनाज को योग्य कीमत न मिलना, आँचलिक परिक्षेत्र की कुप्रथा, परंपरा, रीतियाँ आदि सामाजिक संवेदना के माध्यम से सामाजिक सरोकार का निर्माण करना चाहती है।

इस उपन्यास का नायक अविनाश अपनी माँ को स्वदेश में छोड़कर आँखों में हजारों सपने लेकर विदेश की भूमि की ओर आकृष्ट हो जाता है। माँ अपने बेटे अविनाश को अनेक बार बुलाने पर भी काम की व्यस्तता का कारण बताकर आने को टालता रहा है। स्वित्ज़र्लैंड की लुभावनेवाले सभी पलों के साथ खुलकर निरंकुश होकर जिने का आनंद अविनाश लेने का भरकस प्रयास करता रहा है। वहाँ उसके बेचैनी को दर के लिए उसकी सहकर्मी नैसी के साथ परिचय हुआ। उसके बाद दौनों रिलेशनशिप में रहकर एक दूसरे के पार्टनर बन जाते हैं। वह अपनी प्रेमिका नैसी को सहचारिणी बनाना चाहता था। वहाँ स्विस लोग व्यवहार के आधार पर सबसे ज्यादा सोंचने लगते हैं। जो अविनाश व्यवहार की अपेक्षा हर जगह भावनाशील होकर परिस्थिति का सामना करता है। आखिरकर माँ को मिलने के लिए वह लालायित हो जाता है। एक अघेड अवस्था में जिनेवाला युवक अपने माँ के साथ कोई अनहोनी न हो! इसलिए वह बच्चों की तरह बेचैन और बेताब बन जाता है। माँ के स्वभाव को नायक याद करते हुए कहता है कि, " इतनी कठोर तो मेरी अम्मा ही हो सकती थी! है न, मेरी स्टैचू ऑफ़ लिबर्टी! लेकिन तुम कठोर सिर्फ़ मेरे लिए थीं। सारी दुनिया के लिए तुम्हारा दिल दरिया था। " ²

भारतीय मित्र अभिषेक के माँ के साथ जो हादसा हुआ है वही हादसा उसके जीवन में न आये। इसके लिए वह हर जगह जाकर माँ को मिलने की गुहार लगाकर यात्रा करता है। आखिर में माँ की अस्थिकलश को देखकर मन की सारी वेदनायें उमड़कर आती हैं। मुंबई में उनकी पड़ोसी आशा आंटी जो मावशी के नाम से अविनाश पुकारता है। विदेश से जब अपने घर मुंबई में आया तब उसके मन में अनेक अपराधबोध की भावना भरी थी। एक ओर विगत बीस वर्षों में अनेक परिवर्तन की लहर और दूसरी ओर माँ को मिलने के लिए बेटे का यत्न यहाँ पर गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत हुई है। माँ के मृत्यु के पश्चात माँ का बार बार स्वदेश बुलाने का उद्देश्य आशा आंटी, मामा, आधारवड संस्था के बालासाहब वाडेकर, गोविन्दगिरी, शोभा आदि लोगों से मिलने के उपरांत समझने लगता है। अंतिमतः वह अपने ही देश में रहकर माँ जिस तरह अकेली रहकर भी सामाजिक योगदान से एक परिवार बनायी थी। उसी परिवार के साथ रहकर अविनाश माँ का अधूरा काम पूरा करने की बात ठान लेता है। बालासाहब किसानों की स्थिति का वर्णन ऐसा करते हैं कि, " भारत का किसान एक ऊबड़-खाबड़ खुरदुरा पत्थर बनकर रह गया है जिसकी जिन्दगी में न राग है न रंग, न गीत न संगीत, न दीवाली, न न्यू ईयर। है तो सिर्फ़ तीन चीज़ - कर्ज, कर्ज और कर्ज। देखा आपने आज, जिन्दगी कपास पैदा करने में बीत जाती है इनकी, लेकिन इन किसान की पत्नियों की देह पर कपास से बनी सूती साडियाँ नहीं थी, थीं सस्ती और टिकाऊ पोलिएस्टर की साडियाँ। वो भी कहीं-कहीं किस्तों में खरीदी हुई। " ³ विदेश में पत्नी नैसी और पुत्री स्नेहा के बार बार याद आने पर भी समाज सुधार का एक

जूनन नायक के मन में छा जाता है। वह अपने मन की बात नैसी को खत भेजकर हर समय बताता है। माँ की मानसपुत्री शोभा की अवस्था से पूरी तरह से हिल जाता है। अवि के मामा सुरेंद्र गुहे की आर्थिक स्थिति, मामी की मृत्यु, मामा का लडका चिक् की मृत्यु, संघर्ष की यशोगाथा यहाँ प्रकट हुई है। ठेकेदार का धोखा और बेरोजगार की समस्या का शिकार होनेवाले चिक्, रवि जैसे युवक की समस्या को चित्रित किया गया है। मामा के गाँव के किसानों को लेकर खेती के लिए सड़क निर्माण कार्य, पहाड़ी क्षेत्र में तालाब का निर्माण कार्य भी युवकों को प्रेरणादायी रचना है। हिम्मत हारने से लोग आत्महत्या करते हैं। लेकिन हिम्मत से सामना करने की ताकत किसानों को इस उपन्यास से मिल जाती है। देश - विदेश में घटी घटनाओं को आधार बनाकर आम आदमी के जिन्दगी की समस्या किस प्रकार की है? उन लोगों के पास आर्थिक समस्या छोड़कर सबकुछ है। अर्थ के बिना जीवन को अर्थ नहीं है। ऐसे आर्थिक परिस्थिति में कोई सहारा देनेवाला चाहिए। जिससे होनेवाली आत्महत्या पर हम रोक लगा सकते हैं। किसानों के पास की प्रामाणिकता, कठोर मेहनत करने की क्षमता रहकर भी वह मन से हारकर गलत कदम उठाता है। स्विस में सामाजिक समता प्रस्थापित करने की पध्दति और भारतीय संस्कृति का अलग महत्त्व मधु जी अपने रचना में बखूबी रचयिता का धर्म निभाया है। दो संस्कृति का संघर्ष और भिन्नता को दर्शाते हुए विज्ञान के प्रगति में किसान का महत्त्व प्रतिपादित करनेवाला यह उपन्यास है। मामा के लाख प्रयास करने के बाद भी अविनाश विदेश लौटना नहीं चाहता। मातृभूमि का लगाव मनुष्य को अपने जड़ से उखड़ने नहीं देता। उसे गहराई के साथ और मजबूत बनाती है। वर्तमान किसान शासन और व्यवस्था से न्याय की गुहार लगाता है। मात्र वहाँ उसे आशा के बजाय निराशा झेलनी पडती है। जिससे हारे मन की हार और जिते मन की जित होती है। ऐसे बिकट परिस्थिति में कई आधारवड जैसे सामाजिक संस्था का एकमात्र सहारा मिलता है। देश, राज्य में रहनेवाले हर नागरिक के मन में आशा, आकांक्षा, कर्तव्य, विश्वास, ईच्छा जागृत करना शासन का कार्य होकर भी वे लोग कृतघ्न बन रहे हैं। इसीलिए " ढलती साँझ का सूरज " जैसे उपन्यासों का लेखन प्रासंगिक लगता है। भारतीय संविधान का उद्देश्य सफल बनाने के लिए राष्ट्रप्रेम, स्वातंत्र्य, समता, बंधुता और न्याय के मूल्यों की स्थापना करना आवश्यक है।

प्रस्तुत उपन्यास की व्यथा किसान की आर्थिक समस्या एवं कर्जा अधिक होने से समय पर रकम न देने की पीड़ा, दुख, दर्द, लाचारी और उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँच से वह आत्महत्या जैसे मार्ग की ओर जाने लगा है। किसान सबकुछ सहन कर सकता है पर अपमान सहन करना बहुत कठीन होता है। अंतिमतः अपने परिवार को सुख से दिन दिखाने के फिराक में स्वयं के जीवन को तिलांजली देने लगता है। जो गले में रस्सी बाँधकर, किटकनाशक की दवायी खाकर मृत्यु का वरन करने लगता है। फसल को सही दाम न मिलने से शासन के नाम जानवरों को पूरे फसल में छोड़ देता है। लेखिका का कहना है कि, जिसकी लाठी उसकी भैंस जैसी अवस्था किसान की बन गई है। अविनाश और उनकी माँ के मन में मातृभूमि में तड़पनेवाले किसान के प्रति अपनत्व का भाव रखनेवाले पात्र का यह कथन है कि, " मामू इतने निराश न हों, कोई समस्या ऐसी नहीं जिसका जवाब न हो। इतने वर्षों के अनुभव ने इतना तो मुझे समझा ही दिया है कि बिना लड़े - जूझे कुछ भी हासिल नहीं हो सकता। आप देखिए मैं यहाँ की गरीबी और बेकारी से घबडा कर विदेश भागा लेकिन क्या हुआ, अम्मा को गँवा बैठा तो सौदा कितना महँगा साबित हुआ। आज सोचता हूँ कि काश मैंने यहीं रहकर जीवन से मुठभेड़ की होती तो शायद ज्यादा सुखी और संतुष्ट रहता।"⁴ इस संकट का सामना करने के लिए संस्था की ओर से गाय भैंस, बकरियाँ जैसे जानवरों को दिया जाता है। अविनाश पढा -लिखा दुनिया की सैर करनेवाला युवक है। उसे यहाँ के किसान की अवस्था जानवरों से बदतर होने से वह चिंतित हो

मजाता है। भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति की तुलना इस उपन्यास में कूटकूटकर भरा पडा है। माँ अपने बेटे को अनेक जगह पर उसे पाने के लिए अविनाश की यात्रा कराती है। जिससे सारे भारत देश की संस्कृति, सभ्यता, समाज का दर्शन हो सके।

इस उपन्यास के प्रमुख पात्रों में मानसी पांढरे (माँ), अविनाश, सुरेंद्र गुहे (मामू), आशा आंटी, नैसी, स्नेहा, गोविन्दगिरी, शोभा, दिलीप रुद्रराव, बालाजी, फुलवाताई, बबनगिरी, चिक्, रवि, ठेकेदार आदि सारे पात्र अपने - अपने वर्ग, समूह, संस्था, संस्कृति का प्रतिनिधित्व करनेवाले हैं। वर्तमान समय की बदलनेवाली जीवनशैली और उसमें संघर्ष करने की ईच्छा को दर्शानेवाला उपन्यास है। जब अविनाश अपने जेब से कुछ रुपये एक किसान को किसी कारण दिया था। बहुत समय के बाद वह किसान प्रामाणिकता के साथ रुपये वापस करता है। इस प्रसंग से किसान स्वयं भूखा मर सकता है लेकिन दूसरों को धोखा देना उसके फितरत में नहीं है। जो प्रस्तुत संदर्भ में मिलता है, " कर्ज देणारयाला शेतकरी कधीच विसरत नाही (किसान चाहे खुद को भूल जाए पर कर्ज देनेवाले को कभी नहीं भूलता है)।"⁵

निष्कर्ष :- कुल मिलाकर लेखिका इस उपन्यास में मराठवाडा के जालना जिले के पारतुल, कामथडी और उसके ईर्दगिर्द कई गावों का उल्लेख इसमें पाया जाता है। भगवान बुद्ध, स्वामी विवेकानंद और सावित्रीबाई फुले जैसे विचारकों के चिंतनधारा का काफी प्रभाव मानसी पांढरे पर हुआ है। जो माँ बेटे के एक छोटेसे संवाद में दर्शाया गया है। माँ अपने बेटे का नाम बुद्ध रखना चाहती थी पर दादाजी के जिद के कारण अविनाश नाम रखा गया है। इस उपन्यास की भाषा जनसामान्य में काफी प्रचलित है। साधारण सी बोली भाषा के शब्द, हिंदी, अंग्रेजी और मराठी भाषा के सयुक्त वाक्य, सहज, सरल, ओजस्वी लगते हैं। लेखिका अपने रचना में सजीवता लाने के लिए स्थानीय शब्द और भाषा का प्रयोग करने से उपन्यास काफी रोचक बना है। दखिखनी, उर्दू, अरबी भाषा के भी कुछ शब्द हमें मिलते हैं। किसान जीवन की दास्ता को बहुत ही साधारणीकरण के साथ प्रस्तुत किया गया है। जैसे प्रेमचंद की गोदान नामक रचना एक उच्च कोटी की रचना है वैसे ही वर्तमान समय में किसान समस्या को लेकर मौत के कुँए का अनुभव " ढलती साँझ का सूरज " उपन्यास के माध्यम से मिल जाता है। दो खण्डों का यह उपन्यास किसान विमर्श की महागाथा है। किसान के जीवनचक्र का समग्र अवलोकन यहाँ पर कराया गया है। किसान को समझना बहुत मुश्किल काम है जो अविनाश सोचता है कि, " कितना सही कहा था मामू ने - किसानों के लिए कुछ करना है तो किसान को किसान की आँख से देखना सीखना होगा। बिना नब्ज पकड़े कैसे जानोगे कि कितना बुखार है? पर कितना मुश्किल है किसी गैरकिसान के लिए किसानों के प्रिज्म को देखना - समझना, उसकी ध्वनियों को सुनना, उनके सुख - दुख के विविध रंगों को देख पाना। किसान, चूल्हा और भूख का रिश्ता यहाँ आने से पहले क्या दुनिया का कोई भी मार्क्स समझा सकता था उसे? "⁶ वास्तव में किसानों के अनुभव के बिना समझना असम्भव है। इस दृष्टिकोण के चंगुल से जल्द ही किसान छुटकर आसमान की बुलंदियों को हासिल कर कर आनेवाला युग " कृषी संस्कृति, सभ्यता और समाज " का हो यही मंगलमय कामना हम करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :-

- 1) ढलती साँझ का सूरज - मधु कांकरिया, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली पृ.क्र.1
- 2) वहीं पृ.क्र. 18
- 3) वहीं पृ.क्र.71
- 4) वहीं पृ.क्र.145
- 5) वहीं पृ.क्र.178
- 6) वहीं पृ.क्र.179